गाजर घास उन्नमूलन सप्ताह के अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

गाजर घास के उन्नमूलन हेतु देश में 16 से 22 अगस्त तक जागरूकता कार्यक्रम मनाया जा रहा है। गाजर घास विश्व में सर्वाधिक हानिकारक खरपतवारों में से एक है जो कि फसल, जानवर एवं मनुष्यों में हानि पहुॅचाता है। इसके कारण मनुष्यों में दमा, एलर्जी एवं अन्य श्वास संबंधी एवं त्वचा में एलर्जी संबंधो बिमारियां बढ़ रही हैं। गाजर घास के बढ़तें प्रभाव के कारण स्कूल, खेल के मैदान एवं चारागाह में इसका प्रकोप बढ़ा है। इसके प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि डॉ. ऐ.के. सिंह, प्रधान, शोध केन्द्र प्लान्डु, रॉची के द्वारा किसानों को बताया गया कि इस खरपतवार को नियंत्रण करने के लिए सामूहिक स्तर पर जानकारी होना अतिआवश्यक है इसके लिए खाली स्थान कि जुताई और फुल आने से पहले इसको उखाड़कर फेकने से इसकी वृद्धि को रोका जा सकता है उन्होंने बताया कि यह एक पौधे में 20 से 25 हजार बीज उत्पादन करने की क्षमता है इसके कारण इसको फुल आने के पहले ही इसे नष्ट करके इसे फैलने से रोका जा सकता है। डॉ डो. के. राधव ने बताया कि चकोड़ के पौधे के बीज का उत्पादन करके गाजर घास उगने वाले स्थान पर डालने से इसे फैलने से रोका जा सकता है। इसको 10 एम.एल प्रति लीटर नमक के घोल के छिड़काव से भी इसकी वृद्धि को रोका जा सकता है इसके अलावा जैविक विधि से इसके वृद्धि को रोकने के लिए मैक्सीकन बीटल के द्वारा इसको आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। रासायनिक विधि से नियंत्रण के लिए ग्लाइफोसेट 5 एम.एल. प्रति लिटर के घोल के छिडकाव से नियंत्रित किया जा सकता है। डॉ इन्द्रजीत ने गाजर घास के द्वारा कम्पोस्ट बनाकर इसके नियंत्रण करने पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में केन्द्र के आशिष बालमुचू, शशि कांत चौबे एवं गरगाली गॉव के संतोष गंझू, कपिल गंझू, गंगीया देवी समेत 30 से अधिक किसान उपस्थित रहे।

कृषि विज्ञान केन्द्र
गाजर घाँस उन्मूलन सप्ताह

कृषि विज्ञान केन्द्र
गाजर घाँस उन्मूलन सप्ताह